Dainik Bhaskar (Indore), 05th March 2025, Page- 01

सेहत की चिंता

रिसर्च के लिए ICMR, रॉयल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग लंदन ने अनुदान दिया

वेंटिलेटर संक्रमण से बचाएगी आईआईटी की स्मार्ट टेक्नोलॉजी, इलाज खर्च बचेगा

गजेन्द्र विश्वकर्मा | इंदौर

आईआईटी इंदौर ने एम्स दिल्ली के साथ मिलकर क्रिटिकल पेशेंट के लिए एप्लीकेशन बेस्ड टेक्नोलॉजी तैयार की है। इसकी मदद से वेंटिलेटर से जुड़े संक्रमण को कम किया जा सकेगा। यह मरीज के स्वास्थ्य से जुड़े प्रमुख संकेतों का विश्लेषण कर डॉक्टरों को शुरुआती चेतावनी देता है। इससे अनावश्यक एंटीबायोटिक्स और जांचों से बचा जा सकेगा।

डेढ़ साल की रिसर्च और परीक्षण के बाद इसे तैयार किया गया है। एम्स में तीसरे चरण का ट्रायल जारी है। फिर देश के सभी क्रिटिकल हॉस्पिटल में आईआईटी इसे उपलब्ध कराएगा।

आईआईटी इंदौर की दृष्टि सीपीएस फाउंडेशन की साइंटिफिक ऑफिसर डॉ. अत्रेयी घोष ने बताया कि इससे वेंटिलेटर एसोसिएटेड न्यूमोनिया को पहले ही पहचान कर सकते हैं। इससे एक आईसीयू वार्ड में हर साल 30 लाख रुपए की बचत संभव है।

डॉ. अत्रेयी घोष

डॉ. दीपक अग्रवाल

डॉ. भूपेश कुमार लाड

डॉ. विभौर पंधारे

150 मरीजों पर इसका सफल ट्रायल हो चुका

साइंटिस्ट टीम के सदस्यों ने बताया कि वेंटिलेटर पर जाने से पहले मरीज के कुछ टेस्ट किए जाते हैं। इन डेटा को एल्गोरिदम से तैयार एप्लीकेशन में फिट किया जाता है। ब्लड प्रेशर, ऑक्सीजन सैचुरेशन, बॉडी टेम्परेचर, रेस्पिरेटरी सिस्टम और अन्य कुछ टेस्ट से पता लगता है कि वेंटिलेटर पर किन मरीजों को दिक्कत का सामना करना पड़ सकता है। अब तक 150 मरीजों पर सफलतापूर्वक ट्रायल हो जा चुका है। आईआईटी के चरक सेंटर फॉर डिजिटल हेल्थकेयर का भी इसमें योगदान है। आईसीएमआर और रॉयल एकेडमी ऑफ इंजीनियरिंग लंदन ने अनुदान दिया है। आईआईटी के मैकेनिकल इंजीनियरिंग के असीस्टेंट प्रोफेसर डॉ. विभोर पंधारे, प्रोफेसर डॉ. भूपेश कुमार लाड और एम्स दिल्ली के न्यूरो सर्जन डॉ. दीपक अग्रवाल ने इसे तैयार किया है।